उपसंहार:

अंत म उपसंहार के अंतगत समग्र शोध प्रबंध का सिंहावलोकन करते हए यह स्थापना को गई है कि लोक साहित्य म गुजरात का लोक साहित्य विकसित रूप से ह। गुजरात के लोक साहित्य म जो लोकनाट्य भवाई का एक अलग ही रूप ह । भवाई म समाज म होने वाले कुप्रथा एवं आधुनिक विषयों का विस्तार पूवक उपयोग किया जा रहा ह। भवाई पहले लोक मनोरंजन का साधन के रूप म थी पर समय के साथ उनका रूप भी बदल गया अब भवाई केवल एक नाट्य के रूप म मिलती ह।

प्रथम अध्याय म भारत के प्रमुख लोक नाट्य का परिचय दिया है। उसके साथ साथ लोक शब्द, लोक साहित्य को व्याख्या जो विद्वानों ने को है उसका भी परिचय दिया है। उसके साथ साथ लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य का अंतर भी बताया है। लोक साहित्य म भारत के जो प्रमुख राज्य के लोक नाट्य का विस्तार पूवक परिचय दिया है। लोक नाट्य अलग अलग राज्य के होकर भी वह कही न कही साम्य है। उनको मुखी उद्देश्य लोक के प्रति जागृति लाना एवं अपनी परंपरा को पेढ़ी दर पेढ़ी तक फेलना है। हर एक नाट्य म मुख्य रूप से समाज के कल्याण को ही बात आती है। उसके साथ साथ हमारे वेश भूषा को महत्व दिया है। परंपरा को यही लोक नाट्य ने जिंदा रखा है।

द्वितीय अध्याय म गुजरात के लोक साहित्य के विकास का विस्तार से प्रस्तुत किया है। गुजरात को लोक वाता, लोक कथा, लोक गाथ, लोक नृत्य, लोकगीत, लोक आख्यायन , लोक सुभाषितों का विस्तार से प्रस्तुत किया है। गुजरात के लोग पहेले से ही धामिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से जुड़ा हवा है। लोक गीत म लोक को भावना के साथ साथ अपने मन को प्रफुल्लित कराते लोक गीत के साथ-साथ लोक कथा जो रसात्मक रूप से उपदेश देती सामाजिक कथाओं का वणन किया है। लोक नाट्य भवाई मुख्य नाट्य के साथ गौण नाट्य का उद्भव और समाज से उनका जुड़ाव का सामाजिक काय का विस्तार से परिचय दिया है। लोक आख्यायन जिसम पौराणिक कथा से आज को समस्याओं का वणन किया है। लोक शुभाषितों को गुजराती म कहावत के नाम से जाने जाते है। यहा पर हर एक बात पे कहावत मिल जाती है। उनका उपदेश छोटी बात म मिल जाता है।

तीसरे अध्याय म लोक नाट्य भवाई का समान्य रूप से पॉरचय दिया है। भवाई का इतिहास बहत ही बृहद माना जाता है। असाइत जी ने जिस तरह से भवाई को रचना को उसका भी निरूपण दिया गया है। भवाई के स्वरूप जो वेश के मध्यम से होते है अगर भवाई म वेश नहों होता तो भवाई का कोई अथ ही नहों होता है। भवाई एक सामाजिक लोक नाट्य का मध्यम ही माना जाता है। उसके अतिरेक भवाई म भी कही सारे वेश आते है वह हमारे धम से जुड़े होते है। भवाई को भागों म विभाजित करके पारंपॉरिक एवं आधुनिक भवाई को चचा कराते उसम उपयोग होते वाद्य को भी चचा का विषय बना है। भवाई गुजरात के साथ साथ उसका समान स्वरूप भी हम अन्य लोक नाट्य म मिल जाता है उसको थोड़ी सी चचा को है।

चौथे अध्याय म समाज म जो कु रिवाजो चल रहे है उसे सही रूप से नाटक के मध्यम से भवाई कलाकार ने लाए है। वह समय था जब कोई दृश्य का मध्यम नहों था उसी समय असाइत ने यह वेषों को रचना करके समाज जो उझागर करने को कोशिश को है। समाज म आज भी वह रिवाजो कही ना कही हम देखने को मिल जाता है। आज भी भवाई के यह वेश हमे उतने ही महत्व रूप से उपयोग होते रहे है। यह नाट्य एक सामाजिक के ऊपर ही अधिक प्रयास किया गया है।

अंतिम अध्याय म भवाई सांस्कृति को धरोहर है और भवाई के कुछ अपने नियम के वही विस्तार रूप से बताया है। भवाई म भूगल वाद्य का जो महत्व है उसके जो नियम है, भवाई कलाकार के अपने जो नियम है वह विस्तार पूवक बताया गया है। भवाई म भूगल से जो मान देते है उनका भी विस्तार से चचा करते किस तरह भवाई लेखित नाटक से अलग होके अपनी मौलिकता को अपने संवाद से प्रेक्षको को अनादित करता है। भवाई एक नाट्य होकर भी समाज म हम से किस तरह से जुड़ा है उसका विस्तार से वणन किया है।

भवाई म समाज को ध्यान म रखते हए उनका ही महत्व दिया है। भवाई म लोकनाट्य म प्रचलित हए साथ म एक ज्ञान का साधन बनकर भी आइ है। भवाई म जो वाजिंत्र होते ह उनका भी एक अलग महत्व होता है। भवाई म प्रयोग होने वाली भाषा सामान्य भाषा होती है। सामान्य मनुष्य भी वह भाषा

एवं भवाई म देने वाले संदेश को समज सके। भवाई के कलाकार होते जो होते है वह भवाई को जो नाट्य को बात है तो उनका कोई रचिता नहों होता है। भवाई के कलाकार अपने आप हि उस नाट्य को अपने हिसाब से करते है। भवाई को पहले ना कोई रंगभूमि मिली थी वह तो गांव गांव जा कर गांव के मुख्य द्वार पर ही सब गांव के लोगों को एकठा करके भवाई को दिखाते है। आज समय के साथ उसका रूप भी बदला ह। आज भवाई को एक रंगभूमि का स्थान दिया गया है। आधुनिक भवाई जो है वह केवल एक विषय को लेकर होती है जब कि पारंपारिक भवाई जो होती वह भवाई सभी वेशों को लेकर होती है । पारंपारिक भवाई रात भर चलती है। भवाई लोक नाट्य को अपने तरफ से हो सके उतना श्रेष्ठ बनाने को कोशीश कि है। भवाई म आगे भी शोध हो सकती है जैसे कि आधुनिक एवं पारंपारिक भवाई। भवाई के लुप्त हए वेशों के अंतगत हो सकता है। अंत म संदभ ग्रंथों को सूची प्रस्तुत को गई है।